Edit with WPS Office

पाठ - 9

दीपावली

विधा - त्योहार

शब्दार्थ - कॉपी कार्य

स्मृतियाँ - यादें

प्रकाश - उजाला

आदान - प्रदान - लेन - देन

उल्लास - खुशी /जोश

आलोक पर्व - प्रकाश पर्व

कुप्रथाओं - बुरी प्रथाओं

सोचो और बताओ- कॉपी कार्य

(क) दीपावली पर लोग घर की सफ़ाई क्यों करते हैं?

उत्तर - दीपावली का त्योहार वर्षाऋतु के बाद आता है। वर्षाऋतु मे जगह - जगह नमी व गंदगी हो जाती है। साथ ही शीतऋतु प्रारंभ हो जाती है। लोग घरों के अंदर ही सोते हैं। इस प्रकार, दीपावली के त्योहार के बहाने पूरे घर की सफ़ाई हो जाती है। कीड़े, मकोड़े,मच्छर आदि नष्ट हो जाते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह सफ़ाई बहुत ही आवश्यक है।

(ख) अधिक बिजली की सजावट से हमें बचना चाहिए। क्यों?

उत्तर- अधिक बिजली की सजावट से हमें बचना चाहिए क्योंकि हमारे विकासशील देश मे बिजली का संकट बहुत रहता है। यदि हम दीपावली के त्योहार पर अधिक सजावट बिजली से नहीं करेगे तो यहीं बिजली किसानों के काम आएगी। यहीं बिजली ग्रीष्मऋतु मे हमें शीतलता प्रदान करेगी।

(ग) पटाखे जलाने से क्या - क्या नुकसान हो सकते हैं?

उत्तर - 1 अधिक पटाखे जलाने से धन का दुरुपयोग होता है।

2 कभी-कभी लोग पटाखे जलाने से खुद भी जल जाते हैं।

3 पटाखे का धुआं दमा के रोगी को नुकसान पहुंचाता है।

4 तेज आवाज वाले पटाखे से व्यक्ति बहरा भी हो जाता है।

(घ) लोग आजकल मोमबत्तियो से घर क्यों सजाने लगे हैं?

उत्तर - 1 सबसे बड़ी बात तो यह है कि मोमबत्ती जलाकर हम बिजली की बचत करते हैं।

2 दीपक जलाने से जो गंदगी होती है और तेल गिरता है उससे भी निजात मिलता है।

Edit with WPS Office

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो - कापी कार्य

(क) दीपावली का त्योहार कब मनाया जाता है?

उत्तर - दीपावली का त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है।

(ख) दीपावली के दिन किसकी पूजा की जाती है?

उत्तर - दीपावली के दिन लोग लक्ष्मी - गणेश की पूजा की जाती है।

(ग) दीपावली के साथ कौन - सी लोककथा जुड़ी हुई है?

उत्तर - दीपावली के त्योहार के साथ यह लोककथा जुड़ी हुई है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम लंका विजय के पश्चात अयोध्या लौटे थे। अयोध्यावासियों ने उमंग एवं उत्साह के साथ दीपकों की जगमगाहट में उनका स्वागत किया था। तभी से यह प्रथा आज तक चली आ रही है।

(घ) हम सच्चे अर्थों में दीपावली किस प्रकार मना सकते हैं?

उत्तर - हम बाहर तो प्रकाश करके अंधकार को भगाते ही है किन्तु सच्चे अर्थों में मे दीपावली का मनाना तभी सार्थक होगा जब हम समाज में फैले अन्धविश्वास, मिथ्याचारो. दरिद्रता,अस्वच्छता, जुआँ,खेलना आदि अज्ञान रुपी अंधकारो को दूर करने में समर्थ हो सकें।